प्रथम सेमेस्टर				
<u>उद्देश्य</u> - इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत (गायन) के प्रयोगत्मक पक्ष में दक्ष बनाना है।				
क्र0 सं0	**कोर्स का नाम**	**कोर्स कोड**	**अंक**	**श्रेयांक**
4	**प्रयोगात्मक - 2**	एम0पी**0**ए0एम0वी0-5**04**	**350**	**7**
प्रथम खण्ड	इकाई 1- मंच प्रदर्शन के राग एवं अन्य सभी रागों में छोटा ख्याल [आलाप व तान (बोल व आकार) सहित]।			
	इकाई 2 - पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में ध्रुवपद (दुगुन, तिगुन व चौगुन) सहित।			
	इकाई 3 - पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में धमार (दुगुन, तिगुन व चौगुन) सहित ।			
	इकाई 4 - तानपुरे को मिलाने का ज्ञान ।			
	इकाई 5 - पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों की पढन्त ।			
	इकाई 6 - पाठ्यक्रम की तालों की लयकारी (दुगुन, तिगुन, चौगुन व आड़) में पढन्त।			
	इकाई 7 - पाठ्यक्रम सम्बन्धित मौखिक परीक्षा ।			
नोट – इस प्रश्न पत्र की सभी इकाईयां क्रियात्मक व प्रायोगिक होने के कारण प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर के लिए समान है। विद्यार्थी प्रथम सेमेस्टर एवं द्वितीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखे गए रागों एवं तालों के अनुरूप अध्ययन करें।				
प्रथम सेमेस्टर ***राग - श्यामकल्याण, मारू विहाग, पूरिया कल्याण, बिहागड़ा व बैरागी*** ***ताल - तीनताल, आडाचारताल, चारताल व धमार***				
सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री - **1.वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।** **2. श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण ।** **3. डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग,राग विशारद(दोनों भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।** **4. पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।** **5. एस0एस0 परान्जपे,भारतीय संगीत का इतिहास**				